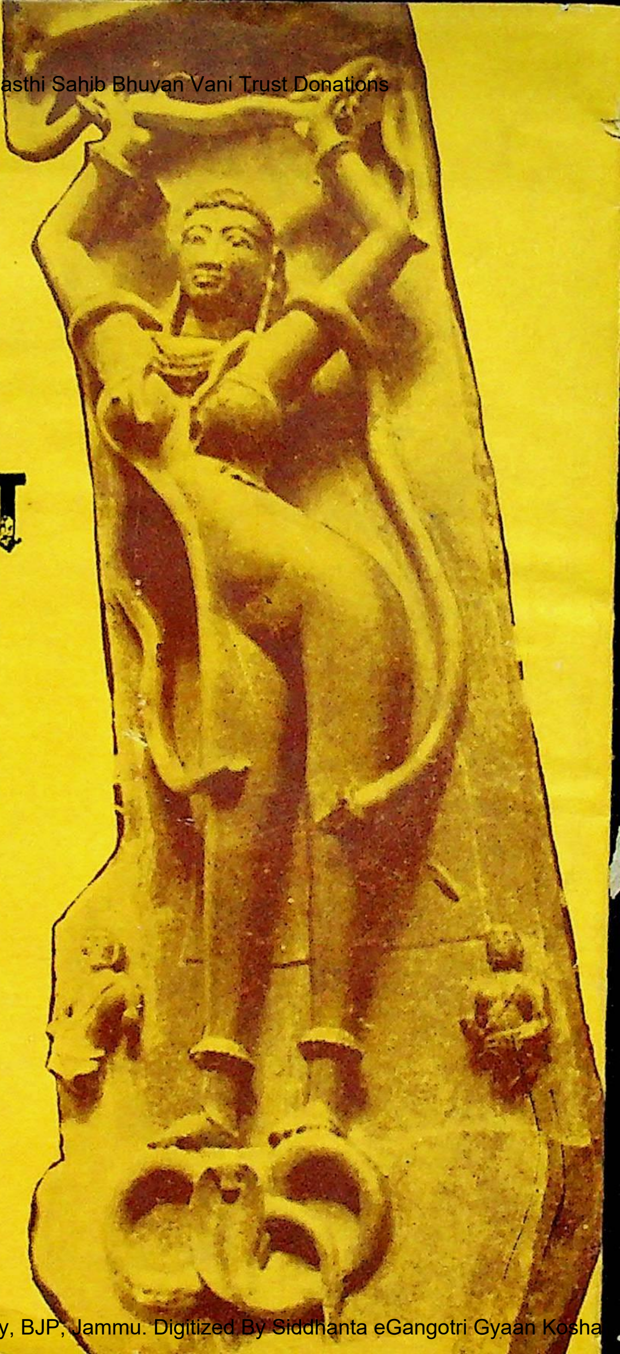
रामप्पा का मंदिर



Cover Photo

BY

Courtesy of the Archaeological

Survey of India

रामप्पा का मंदिर

लेखक

डॉ. सी. नारायण रेड्डी

आंध्र प्रदेश साहित्य अकादमी, कलाभवन, हैदराबाद

प्रथम मुद्रण :

१००० प्रतियाँ

जनवरी १९७१

मूल्य रु. २-००

मुद्रक :

दक्षिण भारत प्रेस,

[illegible] हैदराबाद-४

मेरी बात

आकाशवाणी, हैदराबाद केन्द्र ने मुझसे अनुरोध किया कि मैं रामप्पा के मंदिर को केन्द्र बिंदु बना कर एक श्रव्य रूपक की रचना करूँ। संतोष के साथ मैंने मान लिया। स्वयं जाकर उस मंदिर को देखा। आसपास का वातावरण देखा। आवश्यक बातों का पता लगाया। बहुत-सी ऐतिहासिक सामग्री भी इकट्ठी की। इन सब के आधार पर मैंने श्रव्य रूपक की रचना करके आकाशवाणी हैदराबाद के अधिकारियों को सौंप दिया। पहले तेलगु में हैदराबाद, विजयवाड़ा और मद्रास के रेडियो केन्द्रों से यह रूपक प्रसारित आ। उसके बाद भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में अनूदित होकर आकाशवाणी के सभी केन्द्रों से प्रसारित किया गया। इस श्रव्य रूपक का अनुवाद पहले हिन्दी में श्री दंडूमूडि महीधरजी ने किया। उनका मैं अत्यन्त आभारी हूँ।

रामप्पा की प्रशस्ति पर ध्यान देकर जब आन्ध्रप्रदेश साहित्य अकादमी ने अपने हिन्दी विभाग की ओर से इसे हिन्दी में प्रकाशित करने का निश्चय किया तब मैंने स्वयं इस श्रव्य रूपक में थोड़ा बहुत परिवर्तन करके इसे पाठ्य रूपक बनाया। बीच-बीच में मेरे साथ संपर्क स्थापित कर डॉ० श्रीरामशर्मा एम० ए० पि० एच० डी० तथा श्री इरिवेंटि कृष्ण मूर्ति एम० ए० ने मेरे अनुरोध पर इस रूपक का फिर से हिन्दी में अनुवाद किया। केस अनुवाद और प्रकाशन के सिलसिले में रीढ की तरह

मित्रवर श्री वेमूरि राधाकृष्णमूर्तिजीने सहयोग दिया इन सब का मैं कृतज्ञ हूँ ।

बड़ी उदारता से इस रूपक को प्रकाशित करने का निश्चय करनेवाले आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी के अध्यक्ष, साहिती बृंदाबिहारी डॉ॰ बी॰ गोपालरेड्डीजी और अकादमी के मन्त्री श्री देवुलपल्लि रामानुजरावजी को हृदय से धन्यवाद दिये विना मैं रह नहीं सकता ।

श्री रामानुजराव की भूमिका इस रूपक के लिए तिलक जैसी है । उन्हें और एक बार धन्यवाद समर्पित करता हूँ ।

हैदराबाद
29-1-1971

भवदीय
सी॰ नारायण रेड्डी

एक परिशीलन

देवुलपल्लि रामानुजराव

इसिहास प्रसिद्ध आंध्र साम्राज्य के स्थापक काकतीय राजाओंने रामप्पा के मंदिर का निर्माण कराया था। उस मन्दिर के निर्माण की कथावस्तु लेकर डॉ० सी० नारायण रेड्डी ने तेलुगु में संगीत रूपक की रचना की। आकाशवाणी के द्वारा अखिल भारत रूपक कार्यक्रम में इसे स्थान मिला। भारत की सभी भाषाओं में आकाशवाणी के द्वारा यह रूपक प्रसारित किया गया। इस रूपक की कथावस्तु आन्ध्र के इतिहास की एक सुन्दर घटना से सबंधित है। इसलिए आन्ध्रेतर पाठकों की सुविधा के लिए इस का परिचय देना आवश्यक हुआ।

काकतीय साम्राज्य

जब दक्षिण भारत पर मुसलमानों के अक्रमण होने लगे तब उनके अत्याचारों से हिन्दू धर्म और संस्कृति की रक्षा करने का प्रण काकतीय राजाओं ने किया। वे बड़े रसज्ञ भी थे। उन्होंने कला और साहित्य का भी पोषण किया था।

काकतीय पहले कल्याणी चालुक्य साम्राज्य के सामंत थे। ईस्वी की बारवीं सदी में इस वंश के योद्धा द्वितीय प्रोलराजुने दुर्बल सार्वभौम तृतीय तैलप को हरा कर अपने को स्वतंत्र घोषित किया। उसका पुत्र रुद्रदेव बडा साहसी और योद्धा था। स० 1195 ई० तक उसका राज्य था। उसके समय में आन्ध्र साम्राज्य का विस्तार पूरब में पूर्वी समुद्र तक दक्षिण में श्रीशैलम तक हुआ था। रुद्रदेव के बाद उसके छोटे भाई महादेव राजाने चार पाँच बरस तक ही राज किया। देवगिरि के यादव राजाओं के हाथों वह मारा गया। 119? ई० में उसका पुत्र गणपतिदेव गद्दी पर बैठा। काकतीय राजाओं में इसका स्थान महत्वपूर्ण है। इसके शाशनकाल में ओरुगल्लु

(वरंगल) महानगर का निर्माण हुआ । वह नगर आंध्र साम्राज्य की राजधानी बना । उसने उत्तर में कलिंग से लेकर दक्षिण में कांचीपुरम तक अपने राज्य का विस्तार किया । इसीके समय में सारा आंध्र प्रांत एक राजा के शासन के अधीन हो गया । आन्ध्रों में पहली बार राष्ट्रीय भावना का उदय इसी के राजत्व काल में हुआ । गणपतिदेव ने 62 वर्षों तक राज किया । उनके लड़के नहीं थे । रुद्रमदेवी नामक एक लड़की थी । पिता बचपन से ही उसे रुद्रमदेव कहा करते थे । पुरुषोचित तीर तलवार चलाने घुडसवारी करने और राजनीति की शिक्षा दिलायी । पिता की मृत्युके बाद रुद्रांबा गद्दी पर बैठी । कुछ सामंतोंने औरत की अधीनता स्वीकार नहीं की । उन्होंने विद्रोह किया । मौका पाकर देवगिरि का यादवराजा महादेव आन्ध्र राज्य पर चढ आया । विश्वसनीय सामंत, सेनापति और मंत्रियों की मदद से शत्रुओं को पराजित किया और अपने राज्य की रक्षा की । राणी के सहयोगी सेनानियों में रेचर्ल वेलमनायक मुख्य थे । राणी रुद्रमाने चालुक्य वंश के वीरभद्र राजा से विवाह कर लिया । उस की दो लडकियाँ हुई । उनमें से एक लडकी का नाम था मुम्मडम्मा । उस के पुत्र प्रतारुद्र को राणी रुद्रमाने गोद लिया और उसे गद्दी पर बिठाया । काकतीय राजाओं में प्रतापरुद्र बड़ा पराक्रमी था । इसके समय में तिरुचुरापल्ली तक इसकी सेनाओं ने वीर विहार किया था । दैवी बल के प्रकोप से 1327 ई० में प्रतापरुद्र दिल्ली के सुलतान महम्मद तुगलक के हाथ कैद हुआ । कैदी के रूप में जब वह दिल्ली जारहा था तब नर्मदानदी में कूद कर अपने प्राण त्याग दिये । इसके बाद काकतीय साम्रज्य का अंत हो गया ।

रुद्रसेनानी

गणपतिदेव के सेनानियों में रेचर्ल रुद्रसोनी मुख्य थे । राज्य व्यवस्था में इसका बडा हाथ था । विद्रोही सामंतों को इसने कुचल दिया था । जब देवगिरि के यादवराजाओं के हाथों

काकतीय महादेवराजा का देहांत हुआ और गणपतिदेव शत्रुओं के हाथों बंदी हो गया तब रुद्रसेनानी ने अपने भुज-बल और बुद्धि-बल से साम्राज्य की रक्षा की थी। वह बड़ा ही राजभक्त सिद्ध हुआ था। वह राजनीति और रणनीति का जितना पारंगत था उतना ही कलाओं का ज्ञाता भी था। उसने वरंगल के रुद्रेश्वरालय और पालंपेट के रामप्पा मदिरों का निर्माण कराया। वे दोनों आज भी शिल्पकला के अनुपम केन्द्र बने हुए हैं।

रामप्पा का मन्दिर हनुमकोंडा नगर से 40 मील दूर मुलुगु तालूका के पालंपेट नामक गांव के समीप बना हुआ है। यह चारों तरफ पहाड़ों से घिरा है। यह तालाब के किनारे बना हुआ है। यह भगवान रुद्रेश्वर का मन्दिर है। 'रामप्पा के मन्दिर' के नाम से यह प्रख्यात हुआ है। इसका निर्माण रेचर्ल रुद्रसेनानी ने स० 1213 ई० में कराया। आज भी उनके शिला फलक सुरक्षित हैं। इस मन्दिर का निर्माण क्षत्राकृति के ऊंचे मंच पर नक्षत्राकृति में (Groud Plan) हुआ। यह मन्दिर पूर्वाभिमुखी है। पश्चिमी भाग में गर्भालय के अन्दरूनी हिस्से हैं। उसके सामने चतुरस्र नाट्य मंडप है। उसकी चारों तरफ छोटी-सी चहार दीवारी है। पूरब, दक्षिण और उत्तर के प्रवेश द्वारों पर मुखमंडप और उनके सोपान बने हुए हैं। गर्भ-गृह की दीवार की बाहरी ओर तीन तरफ सुन्दर मंजिलोंवाले देव प्रकोष्ठ हैं। गर्भालय का द्वार अनुपम शिल्प-कला से विलसित हैं। रंग मंडप के मध्य भाग में चार स्तम्भों पर स्थित ऊपरी छत शिल्प-कला का अनुपम उदाहरण है। मंडपों के सभी स्तम्भ काकतीय शिल्प-कला की विविध रीतियों के प्रतीक हैं। मंडप के सिंहद्वार के स्तम्भों के ऊपरी हिस्से में चारों ओर मदनिका शिल्प से विलसित शिलाफलक लगे हुए हैं। मदनिका की वे मूर्तियाँ भरतनाट्य की विविध भंगिमाओं में है। गर्भगृह के सामने पूर्वी मुख मंडप के आगे ऊँचे मंच पर नदी की मूर्ति है।

यह आन्ध्र शिल्पकला का सुन्दर नमूना माना जा सकता है।

इस मन्दिर के शिल्प सौंदर्य को निस्सार शब्द पूर्णरूप से प्रकट नहीं कर सकते। प्रत्यक्ष देखने पर इसकी सुन्दरता की जो अनुभूति होती है वह वाङ्मय के द्वारा वर्णित हो सके तो वाङमय सचमुच चरितार्थ हो सकेगा। इस मन्दिर की दिव्य कला मूर्तियों, उनके कर चरण विन्यासों, उनकी वेषभूषाओं, उनकी शारीरिक भंगिमाओं और उनकी मुख मुद्राओं को ध्यान से देखें तो ऐसा लगता है कि काला पत्थर शिल्पी के हाथ में पड़ कर नरम हो गया और मोम-सा बन गया। रामप्पा के मन्दिर की मूर्तियों की शिल्पकला को आन्ध्र संस्कृति के भंडार का शिरो-रत्न कहें तो उसे उत्प्रेक्षा मात्र समझना ठीक नहीं। चालुक्य राजाओं को शिल्पकला की संपत्ति के भी वारिस बन कर काक-तीयोंने उस पर चार चाँद लगा दिये थे।

संगीत रूपक

रामप्पा मन्दिर के नृत्य में लीन रमणी के शिलाफलक के आधार पर इस संगीत रूपक का सृजन किया गया।

बृंदगान के साथ रूपक का प्रारम्भ होता है। दिग्विजय के बाद काकतीय राजा गणपति देव का दरबार लगा रहता है। उसमें रुद्रसेनानी रामलिंगेश्वर मन्दिर के निर्माण की अभिलाषा व्यक्त करते हैं और यह काम जायप सेनानी को सौंपना चाहते । राजा गणपतिदेव अपनी स्वीकृति देते हैं। दोनों सेनापति उप-युक्त स्थल और शिल्पी की खोज में निकलते हैं। उन्हें चंद्रभूषण नामक युवक शिल्पी दिखाई देता है। उसमें महान शिल्पी के दर्शन कर उसे मन्दिर के निर्माण का कार्य सौंपते हैं।

जायप सेनानी का लक्षण ग्रंथ "नृत्त रत्नावली" के आधार पर चंद्रभूषण मूर्तियाँ गढता रहता है। अचानक उसका परिचय

एक संपेरों की कन्या नागी से होता है। दोनों का परिचय प्रणय में बदल जाता है। बात यहाँ तक पहुँचती है कि चंद्रभूषण की शिल्पकला के लिए नागी प्रेरक बन जाती है। अन्य शिल्पी तथा सेनापति उसके प्रेम से नाक भौं सिकोड़ते हैं। शिल्पी चंद्रभूषण नागी की मूर्ति गढ कर उसे सिंह-द्वार पर खड़ा करना चाहता है। इस पर जायप सेनानी नाराज होता है। चंद्रभूषण का तिरस्कार कर उसे बंदी बना कर कारागार में डाल देता है। मंदिर का निर्माण रुक जाता है। एक दिन रात को नागी आती है और चंद्रभूषण को कैद से छुड़ा कर अपने साथ ले जाती है। सेनापति की आज्ञा पर सिपाही शीघ्र ही उन दोनों को पकड़ कर ले आते हैं। सेनापति नागी को मृत्यु दंड और शिल्पी को आजीवन कारावास का दण्ड देता है। उस दिन रात में सेनानी का मन विक्षुब्ध हो जाता है। स्वप्न में नंदिकेश्वर दर्शनदेते हैं। वास्तविक बात उससे बताते हैं। जायप सेनानी उन दोनों को मुक्त कर देता है और उनकी प्रशंसा करता है। शिल्पी मंदिर के निर्माण में लग जाते हैं। मंदिर बन जाता है उद्घाटन का उत्सव होता है। राजा तथा सेनापति सब उसमें भाग लेते हैं। महाराजा की आज्ञा पाकर नागी नृत्य करती है। सब उसकी प्रशंसा करते हैं। वृंदगान के साथ रूपक समाप्त होता है।

इस कथावस्तु के मुख्य पात्र शिल्पी और नागी को छोड़ कर बाकी सभी पात्र इतिहास प्रसिद्ध ही हैं। लेखक ने इतिहास का थोड़ा-सा अंश ही लिया है। रसानुकूल पात्रों का सृजन किया है एक कथा का सूत्र-पात कर शृंगार प्रधान संगीत रूपक की रचना की है। इसकी कथा रामप्पा मंदिर के सिंहद्वार पर बने मदनिका शिल्प की नागिन को घेर कर चलती है। नाटककार की सौंदर्य दृष्टि के अनुकूल और ऐतिहासिक मूल्यों की रक्षा करती हुई कथा की कल्पना आगे बढती है। इस रूपक के शिल्पी चंद्र-भूषण और नागी के पात्रों का चित्रण मनमोहक है। उनका प्रणय पवित्र है। रामप्पा के मंदिर की मूर्तियों की तरह इस

रूपक के पात्र भी सुन्दरता के पारखी हैं

ईश्वर और जगत् को साधन बनाकर मनुष्य को रस और भाव का आनन्द प्राप्त करना चाहिए। आनंद के रूप अनगिनत हैं उसमें सर्वविदित और सर्व सुलभ शृंगार है। यह सर्वप्रिय भी है। स्त्री-पुरुष का पारस्परिक आकर्षण ही शृंगार है। सृष्टि की मूल शक्ति वही है। उपनिषद उसी की महिमा का स्मरण करते हैं। देवता और ऋषियों की कथाएँ भी इसके दृष्टांत हैं। परमेश्वर के अनंतानंत विलासों में वह एक नित्य विलास है। वह जगत् का धर्म है। तरु लताओं के पुष्पों की तरह स्त्री पुरुषों का शृंगार भी है। भगवान को समर्पित पुष्प पावन बनते हैं। भगवान के प्रसाद के रूप में शृंगार का जो अनुभव किया जाता है वह धर्मबद्ध है। ईश्वर के स्मरण से मानवों के सब व्यापार पावन बनते हैं। शृंगार की उपासना भी वैसी ही है। इस संदेश को प्रकट कर रसानंद की रीतियों को प्रकट करना ही कला कुशल कलाविदों का लक्ष्य है। अलंकार शास्त्र के मूर्धन्य प्रणेता आनंदवर्धन ने शृंगार रस की विशेषता को निम्न प्रकार प्रकट किया है—

> "शृंगार एक मधुरः परः प्रल्हादनोरसः
> तन्मयं काव्य माश्रित्य माधुर्यं प्रतिष्ठिति"
> "शृंगारी चेत्कविः काव्ये जातं रसमयं जगत्
> नएववीत रागश्चे न्नीरसं सर्वमेवतत्"

मित्रवर डा० सी० नारायणरेड्डी दैवी प्रदत्त मधुर स्वर, प्रतिभा और भावुकता से संपन्न आन्ध्र प्रदेश के लोकप्रिय आधुनिक कवि हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि उनके संगीत रूपक का यह हिन्दी अनुवाद आन्ध्रेतरों के हृदयों को आह्लादित करने में अवश्य सफल सिद्ध होगा।

रामप्पा

बृन्दगान

फूल बिकसे पत्थरों में उस राम मंदिर की है लीला
आराम मंदिर की है हेला
दिल है तडपे पत्थरों में उस रासक्रीडा की है शाला
उस राम मंदिर की है लीला

यात्री

अहा, रामप्पा का यह मन्दिर शिल्प-कला की पराकाष्ठा है। इस मन्दिर के आंगन में पाँव रखते ही अपनी सुषमा से हृदय को अपनी ओर आर्कषित करता है। नक्षत्र की आकृति में बनी यह वेदिका, मेघों को आमंत्रित करनेवाला यह गोपुराग्र, चारों दिशाओं में झूमनेवाली तरु-लताएँ, मन पर गन्ध-लेप करता हुआ मलय-पवन, मन और मस्तिष्क को मंत्रमुग्ध करते जा रहे हैं। और भी अन्दर जाकर देखता हूँ······दर्पण जैसे ये आलय-स्तंभ हैं। इन स्तम्भों पर अप्सराएँ प्रतिच्छायित हो रही हैं। ये हैं अमृत-सौन्दर्य के आदर्श ·······। कब का है कला का यह अद्भुत भण्डार? इस सुन्दर मन्दिर के आंगन में न जाने कितने वसन्तों ने बृन्दगान किया है! कला का यह आवास कब बना होगा! इस मन्दिर के गर्भ-गृह में कितना काल कपूर की तरह पिघल गया है!

बृन्दगान

बहुत पुराना यह मन्दिर है जन्मकथाएँ इससे जुडी हैं
कला देवियों की आँखों में होकर बंदी काल छिपा है।।

यात्री

इस मन्दिर का निर्माण किन उपकरणों से हुआ ? शिलाओं से ? नहीं, इन्हें शिला कैसे कहा जाए ! न जाने किस अपर ब्रह्म के कर-कौशल से ये शिलाएँ मोम की तरह पिघल गई हैं। धूल से लिपटे ये मूक पत्थर कहाँ और नयनों में अधूरी कामनाएँ और अनबुझी कान्तियाँ झलकानेवाली ये सजीव शिल्प की प्रतिमाएँ कहाँ ? कौन कह सकता है कि ये पत्थर हैं !

बृन्दगान

नहीं है पत्थर, छेनी के लगते ही ये उमड़ती तरंग है
नहीं है केवल यह तरंग साकार स्वप्न की उमंग है ॥

यात्री

इतनी प्रतिमाएँ ? मैं किस किसको देखूं ? प्रत्येक मूर्ति एक संपूर्ण जीवन का प्रतिबिम्ब है। सृष्टि-रहस्य की एक मधुर व्याख्या है। यहाँ संप्रदाय और सौन्दर्य का पाणिग्रहण हुआ है। यह वह स्वप्न-लोक है, जहाँ आवेग और चिन्तन आलिंगन में लिपटे हुए हैं।

बृन्दगान

भूतकाल की भव्य कथाएँ शास्त्रधर्म की रम्य कलाएँ
इस मन्दिर के उर में छिपी है कवि की आँखें देखसकेंगी ॥

यात्री

अहा, कैसी प्रतिमाएँ हैं ? मदन-पीडित मदिराक्षियाँ, पूजा-नृत्य में व्यस्त कुसुमांगियाँ, नाग-कन्याएँ। नाग-नृत्य, चारों ओर मृदंग वादक ; मृदंग……जहाँ देखो, वहाँ मृदंग, मृदंग …..मृदंग……

(मृदंग-वादन उच्च स्वर में सुनाई देता है)

गीत

ऐसे मृदंग हैं ये तेरे, ऐसे अपर भृंग हैं ये तेरे
नाट्य देवता के नूपुर में निद्रित लयब्रह्म जिनसे जागे ॥

नंदिकेश्वर बैठा है यहां जिसके नयन तप के प्रतीक हैं
गजामनोहर बैठा है यहाँ मानों आत्मलिंग ही प्रकटा है ॥
एक तरफ है गज समूह और एक तरफ हैं हँस समूह
जिन्हें देख कर लोग भूलते मंद गमन की मधुर स्मृतियाँ ॥
सिंह द्वार के इधर उधर दीख रही हैं दो प्रतिमाएँ
अहो वे हैं मदनिकाएँ, मधुर मधु की ज्वालिकाएँ ॥
हर मूरत का तन इक धनु है
हर मूरत का कर इक शर है ॥

(वाद्य-संगीत उच्च स्वर में सुनाई देता है)

यात्री

(तन्मय होकर) कितना मनमोहक है यह मदनिका-शिल्प ? इसके कर्ण कुण्डल उत्फुल्ल कमल जैसे हैं। अपना आंचल सम्हालने-वाली इस विलासिनी के नयनों में अटकी हुई मसृण लज्जा की व्याख्या करनेवाला मल्लिनाथ कहाँ है ? दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखती हुई इस मोहनांगी का ग्रीवा-भंग सुन्दरता का दूसरा तट है। यह कौन है ? सुधा-सागर की बलखाती लहर जैसी कमर है। दोनों हाथों में दो सर्प। कहीं यौवन के आवेग में वेणी समझकर तो इन सर्पों को हाथ में नहीं लिया है ? अरे, यह क्या है ? सिर पर फुफ़कारनेवाला भुजंग ! पैरों के नीचे एक दूसरा फणीन्द्र। आखिर कौन है यह ! हाँ, इसमें कोई सन्देह नहीं, यह तो नागांगना है। नागिन है। इस महा-शिल्प को देखते ही मुझमें अनुपम भावनाएँ जागृत होने लगी हैं। इस नागिन में न जाने कौन-सी रागिनी छिपी हुई है ? इस शिला-प्रतिमा में न जाने कौन-सा कला-हृदय निहित है। न जाने किस नारी की गाथा इस शिला की सांस बन गयी है।

(उन्मत्त सा हो कर)

स्मृतियों की पालकियाँ······ऊहाओं के कहारों का ओहों. ओहों के नारे············इन्द्र धनुष जैसी अनुभूतियाँ············ अरे·········मैं कहाँ हूँ?·········कहाँ हूँ?······क्या कहा?······ काकतीय साम्राज्य में?······सम्राट गणपतिदेव के शासन-काल में? कितना सुहावना है!······मैं लहरों पर तैर रहा हूँ······सपनों पर तैररहा हूँ······लहरों पर······लहरें ......सपने·· ···लहर······ स्वप्न···

(स्वप्न-सूचक संगीत सुनाई देता है)

दूसरा दृश्य

(सम्राट गणपतिदेव का दरबार। सम्राट का प्रवेश।)

बन्दीजन

श्री स्वयंभूनाथ देवश्रीपाद पद्माराधक पधार रहे हैं।
परबलसाधक पधार रहे हैं।
प्रत्यक्ष-प्रमथ सुगुणावतार पधार रहे हैं।
कदन प्रचंड पधार रहे हैं।
चलर्मति गंड पधार रहे हैं।
श्रीमान् महामण्डलेश्वर पधार रहे हैं।
काकतीयपुरवराधीश्वर पधार रहे हैं।
दिगन्तराल विश्रान्त कीर्ति धाम पधार रहे हैं।
सम्राट काकतीय गणपतिदेव पधार रहे हैं।

(सम्राट सिंहासन पर आसीन होजाते हैं, आस्थान-कवि श्लोक पढ़ते हैं।)

एक कवि

यदुदयकृतचेतोरिखणस्सिहणोयत्
चटुल सुभटधाटीदत्तभंगः कलिंगः
अपिचयदुपसेनाजीविनौलाटगौडौ
गणपतिनृपतेर्यः श्लाघते विक्रमाय।

(सभासदों की करतल-ध्वनि)

दूसरा कवि

प्रस्थानेतस्यवाजि व्रजखुरदलितादुत्थिता भूमिभागात्
भातिस्फीतानुकूल प्रसृतपवनतो धूलिरग्रे व्रजंति
पृथ्वीतेनानुवेलम् निखिल नयविदारक्षिततातत्प्रियार्थम्
ताद्वैरिक्षोणिपालान् स्वयमिवरमसाहंतुमग्रे प्रयान्ति।

(सभासदों की करतल-ध्वनि।)

ये दोनों श्लोक उस समय के शासनों में से उद्धृत किये गये हैं।

गणपतिदेव

अमात्यवर ! सेनापतियो और सभासदो ! कलिंग देश की विजय के पश्चात् पहली बार यह सभा बुलाई गई है विजय-यात्रा का यशोगान करनेवाले कवियों को हमारा अभिवादन है। आज समग्र आंध्र देश काकतीयों की छत्र-छाया में आ चुका है। युद्धकाल समाप्त हो गया है। शान्ति-देवता ने वीणा सँवार ली है। केवल राज्य का विस्तरण ही हमारा लक्ष्य नहीं है। कलाओं का पोषण काकतीय वंश की पुरानी परंपरा है। इस अवसर पर मैं सभा को एक शुभ समाचार सुनाता हूँ। हमारे पराक्रमी रुद्र सेनानी ने मुझे सूचित किया है कि वे ओरुगल्लु प्रान्त में शिवालय का निर्माण करना चाहते हैं। शान्ति के दिनों में देवालय के निर्माण की इच्छा करनेवाले रुद्र सेनानी का हम इस सभा में अभिनंदन करते हैं।

रुद्र सेनानी

मेरा अल्प-संकल्प, प्रभु की अनल्प प्रशंशा प्राप्त कर सका, यह मेरा सौभाग्य है। जैसा कि प्रभु ने अभी कहा, रामलिंगेश्वर के मन्दिर का निर्माण मेरी दीर्घकालीन इच्छा है। किन्तु प्रभु के पितृदेव के अग्रज स्वर्गीय रुद्रदेव द्वारा निर्मित हनुमकोण्डा के सहस्रस्तंभी मंदिर के सम्मुख मेरा यह सकल्प सूर्य को दीपक दिखाने के समान है।

गणपतिदेव

सेनापति ! तुम्हारी विनयशीलता प्रशंसनीय है। कला की प्रतिभा वहीं तक समाप्त नहीं हुई। वह नव नवोन्मेषणी है। क्या तुम समझते हो कि सहस्रस्तंभी-मन्दिर से भी बढ़कर सुन्दर मंदिर का निर्माण करनेवाले शिल्पी आज नहीं हैं ?

रुद्र सेनानी

श्रीमान् ! मैं तो केवल अपनी असमर्थता व्यक्त कर रहा था। मेरा जो सम्बन्ध कृपाण से है, वह कला से नहीं है। मन्दिर-निर्माता को धार्मिक सम्प्रदाय और सौन्दर्य के समन्वय में समर्थ होना चाहिए।

गणपतिदेव

हम तुम्हारा संकेत समझते हैं, रुद्र सेनानी! तुम्हें किसी सहायक की आवश्यकता है तो निस्संकोच हो कर कह सकते हो।

रुद्र सेनानी

श्रीमान् ठीक कहते हैं। गज सेनाध्यक्ष श्री जायप सेनानी इस कार्य के लिए उपयुक्त व्यक्ति हैं। वे मेरा साथ दें तो यह संकल्प पूरा हो जाएगा।

सभासद–१

रुद्र सेनानी का कथन उचित है।

सभासद–२

महामंत्री के छोटे भाई सकल-कलाओं के पारखी हैं। निस्संदेह वे इस कार्य के लिए पूर्णतया उपयुक्त हैं।

(सभा में हर्षपूर्ण कोलाहल)

गणपतिदेव

सभासदों का विचार हमें मान्य है। जायप! तुम्हारी क्या राय है?

जायप सेनानी

श्रीमान् की आज्ञा और महासेनानी की आकांक्षा को मैं कैसे टाल सकता हूँ? यदि आप दोनों का सहयोग प्राप्त हो तो आसमान को धरती पर उतारने का साहस कर सकता हूँ।

रुद्र सेनानी

आप जैसे कलाविद् ने मेरी आकांक्षा को आदर प्रदान किया है। यह जानकर मुझे ऐसा लग रहा है कि मैंने आकाश को छू लिया है। मेरी एक और प्रार्थना है। मैं चाहता हूँ कि मेरी रचना "नृत्त रत्नावली" की नाटच-भंगिमाओं के उदाहरण देवालय की भित्तियों पर अंकित हों। इससे हमारा मन्दिर नृत्य और शिल्पकला का अपूर्व संगम बनेगा।

गणपतिदेव

रुद्र सेनानी का विचार सर्वथा उचित है। जायप ! इसी सप्ताह तुम मन्दिर-निर्माण का कार्य प्रारम्भ करो। इस कार्य का पूरा अधिकार मैं तुम्हें सौंपता हूँ। हम चाहतेहैं कि तुम्हारी देख-रेख में रामलिंगेश्वर का भव्य मंदिर रस-लोक बन जाये। इसकी कला चालुक्य शिल्प-कला पर चार चाँद लगा दे।

जायप सेनानी

आपकी जैसी आज्ञा।

(दोनों का प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

(दूर से पत्थर पर हथौड़ा चलाने की ध्वनि सुनाई देती है ।)

चन्द्रभूषण

(गीत गुनगुना रहा है ।)

कौन जाने पत्थरों में छिप गए हैं नयन किसके
कौन जाने पत्थरों में तप रहे हैं हृदय किसके ? ।। कौन ।।
पापों से छुटकारा पाए तापों से पिंड छुड़ाए
पड़े हुए हैं दूर विपिन में मानों बनकर मौन तपस्वी ।।कौन ।।
ये न हिलते ये न चलते होंठ इनके नहीं खुलते
छेनी की आहट पाकर उमंग से ये सचल उठते ।। कौन ।।
तन है इनका बहुत कड़ा पर, मन है इनका बहुत बड़ा
प्राणवान इस मानव जग से लोकोत्तर हैं ये पत्थर ।। कौन ।

रुद्र सेनानी

जायप, उसे देख रहे हो ?

जायप सेनानी

रुद्रन्ना, कौन है वह ?

रुद्र सेनानी

मैं भी पहली बार ही इसे देख रहा हूँ जायप ।

जायप सेनानी

पता नहीं, इस घने जंगल में यह युवक क्या कर रहा है ?

रुद्र सेनानी

वह कुछ गुनगुना रहा है । चलो, उसके पास चलें ।

(दोनों उसके समीप जाते हैं ।)

रुद्र सेनानी

कौन हो भाई ? पत्थरों से बातें कर रहे हो ?

चन्द्रभूषण

और कौन हो सकता हूँ ? पत्थरों में जीवन ढूंढ़नेवाला एक पागल हूँ।

जायप सेनानी

तो तुम मूर्तिकार हो ? भाई, तुम्हारा नाम क्या है ?

चन्द्रभूषण

चन्द्रभूषण।

जायप सेनानी

बहुत अच्छा नाम है। मूर्तिकला का तुम्हारा अभ्यास कब से है ?

चन्द्रभूषण

मूर्तिकला तो मूझे बचपन से मिली है।

जायप सेनानी

इसका अर्थ यह है कि तुम्हें यह कला वंश-परम्परा से मिली है। तुम अपने पिताजी का नाम तो बताओ।

चंद्रभूषण

शिव देवय्या।

जायप सेनानी

क्या कहा ! शिवदेवय्या ! रुद्रन्ना, सुन रहे हो ! सहस्रस्तंभ मन्दिर के महानन्दी के स्रष्टा महाशिल्पी शिव देवय्या। उनके पुत्र हो तुम !

चन्द्रभूषण

जी हाँ ।

रुद्र सेनानी

बहुत प्रसन्नता हुई । सिंह के पेट से सिंह ही जन्म लेता है ।

जायप सेनानी

चन्द्रभूषण ! हमें बड़ी प्रसन्नता है कि हम लोग तुम से परिचित हुए । जिस बेल को हम खोज रहे थें, वह हमारे पाँवो में स्वयं आ लगी । रुद्र सेनानी रामलिंगेश्वर के मंदिर के लिए उपयुक्त स्थान की खोज में निकले हैं । इस कार्य में तुम्हें भी अपनी भूमिका अदा करनी होगी ।

रुद्र सेनानी

चन्द्रभूषण ! जायप सेनापति ही मन्दिर-निर्माण का भार वहन कर रहे हैं । मैं तो निमित्त-मात्र हूँ । तुम्हें इस निर्माण का प्रधान शिल्पी बनना होगा । जायप सेनानी की "नृत्त रत्नावली" में दी गयी नृत्य-भंगिमाओं को इस मन्दिर के स्तम्भों पर अंकित करना है ।

चन्द्रभूषण

आप दोनों कला-मर्मज्ञों का आदेश बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार करता हूँ । किन्तु निवेदन करना चाहता हूँ कि आप लोगों ने मेरे सामर्थ्य की परीक्षा लिये बिना मुझे यह महाभार सौंपा है । मुझे संदेह है कि मेरी अयोग्यता से कही यह बेल आपके पाँवों के लिए शृंखला न बन जाये ।

जायप सेनानी

(सस्मित) वत्स, यह संदेह नहीं, तुम्हारी सहृदयता है । यदि फूल की बेल हमारे पाँवों के लिए शृंखला भी बने तो उसे हम अलंकार ही मानेंगे । क्या कहते हो ?

चन्द्रभूषण

प्रभू ने मेरी जिह्वा पर विचित्र शृंखला बांध दी है।

रुद्र सेनानी

चलो, वत्स चन्द्रभूषण, पालमपेट सरोवर से आधे कोस की दूरी पर मंदिर का निर्माण करना है। तुम भी हमारे साथ चलो। उचित स्थल के निर्णय में तुम्हारी भी सम्मति आवश्यक है।

चंद्रभूषण

जो आज्ञा महाराज।

(सब का प्रथान)

★

चौथा दृश्य

(हथौडे और छेनी के चलने की ध्वनि सुनाई देती है। छेनी की आवाज के साथ चन्द्रभूषण गुनगुनाता है।)

नागी (नेपथ्य में)

(दूर से) सांप·· सांप···बचो···बचो···

(नागी प्रवेश करती है)

साँप......साँप (साँप फन फैला कर फुफकारता है। चन्द्रभूषण के हाथ से छेनी गिर पड़ती है। वह विस्मय प्रदर्शित करता है। नागी आगे बढ़ कर सांप को पकड़ती है।) डसके ही छोड़ता। अब कोई बात नहीं, बच गये बाबू।

चंद्रभूषण

कौन हो तुम ?

नागी

मैं.....मैं.....मैं

चंद्रभूषण

डरो मत, मुझे प्राणदान दिया है तुमने। बोलो तुम कौन हो ?

नागी

मैं सपेरे की बेटी हूँ। पालम्पेट मेरा गाँव है। पूंगी बजाते हुए बमी के चारों तरफ घूमती हूँ। साँप नचाना मेरा काम है। बाबूजी, बड़ा हरामी साँप है यह। सबरे से परेशान कर रहा है, अब जाकर पिटारी में बन्द हुआ है। मेरी अकल पर पत्थर पड़े, मैं नाम बताना ही भूल गयी। मेरा नाम नागी है।

चंद्रभूषण

जैसा नाम वैसा रूप, जैसा रूप वैसा नाम।

नागी

बाबूजी। मन ही मन क्या बडबडा रहे हैं ? अब मैं चली।
(पाँवों की कौडियाँ बजती हैं।)

चंद्रभूषण

अरे, अभी चल दी, नागी, ओ नागी।

नागी

बाबूजी, क्या मुझे बुला रहे हैं ?

चंद्रभूषण

हाँ नागी, तुम्हें ही तो। आओ, तुम से कुछ बात करनी है।

नागी

मुझसे ? सँपेरी की छोकरी से बाबू साहब बात करेंगे (निकट आती है।)

चंद्रभूषण

सँपेरे की छोकरी से नहीं, एक सजीव प्रतिमा से।

नागी

बाबूजी की बात मैं क्या समझूं ? समझ में आनेवाली बात बोलो तो मैं ठहरूँगी।

चंद्रभूषण

अच्छा नागिनी।

नागी

मेरा नाम नागी है बाबू साहब।

चंद्रभूषण

नागिनी नही ?

नागी

यह तो बड़े लोगों का नाम है। मेरे लिए नागी बस है।

चंद्रभूषण

कितनी मुग्धता है ठीक है ! नागी।

नागी

ऊँ……ऊँ, फिर… फिर, तुम्हारा नाम……

चंद्रभूषण

चन्द्रभूषण। यहाँ, इधर-मेरे सामने बैठो।

(नागी पास बैठती है।)

चंद्रभूषण

वह बीन मुझे दो। वही, वही, …वह पूंगी।

नागी

ओहो, यह…यह लो।

चंद्रभूषण

(बीन बजाने का प्रयत्न करता है।)

नागी

बाबूजी, बाबूजी, यह मेरे मुंह की लगी है। इसे मुंह न लगाओ।

चंद्रभूषण

(हँसता है और बजाता है)…अरे, अपस्वर निकल रहा है।

नागी

तुम से नहीं बजेगी यह बीन। मैं बजाऊँ ?… सुनोगे ?

(बीन बजाती है।)

चंद्रभूषण

(तन्मय होकर) वाह, नागी वाह ! बीन बजाते समय तुम्हारे शरीर में जो सर्पिल रेखाएँ उभरती हैं, उन्हें यदि मैं मूर्तिमान कर सका तो अपने को धन्य समझूंगा।

नागी

हटो······मैं नहीं बजाऊँगी।

चंद्रभूषण

क्यों नागी ? रुक क्यों गई ?

नागी

तुम तो न जाने क्या क्या कहने लगे हो। मेरे पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता।

चंद्रभूषण

अच्छा, अब मैं नहीं बोलूँगा। बजाओ, बीन बजाओ। नागी।

नागी

उँ···हूँ···

चंद्रभूषण

क्यों.....?

नागी

बाबू साहब! माटी को मुतिया बता रहे हो। मुझे शरम लगती है। साँझ हो गयी। अब मैं चली।

(नागी का बीन बजाते हुए प्रस्थान)

चंद्रभूषण

आह, कितनी तरलता है। ठीक नागिन जैसी चाल है। कटि और ग्रीवा की भंगिमाएँ······सब कुछ नागांगना की याद दिलाती हैं। नागी······नागी······।

(एक सैनिक का प्रवेश)

श्रीमान पधार रहे हैं।

चंद्रभूषण

कब ?

सैनिक

घडी भर से प्रतिमाओं को देख रहे हैं।

चंद्रभूषण

अच्छा।

(जायप का प्रवेश)

चन्द्रभूषण ! तुम्हारा काम कहाँ तक हुआ ?

चंद्रभूषण

लगभग बीस नाटय-मुद्राओं के उदाहरण पूरे हो गये हैं।

जायप

बहुत अच्छा ...वह कौन थी जो यहाँ से अभी-अभी चली गयी है?

चंद्रभूषण

वह......वह......वह सपेरे की लड़की नागी थी।

जायप

नागी। ठीक है। अच्छा मैं चला। सावधानी से अपना काम करो।

पांचवाँ दृश्य

नागी

हुश नागिन, जरा ठहरो। बाबू साहब के यहाँ जाना है। हाथ लगे तो घर ले जाकर दूध पिलाऊँगी। गाय का दूध पिलाऊँगी। आ जारी, ओ अच्छी माई। आ जारी नागिन, बाबू साहब कितने अच्छे हैं! जब से मैंने उन्हें देखा है, मेरा मन मुझ में नहीं रहा। सूरज सिर पर आ गया। आ जारी आ जा।

गीत

रुक जा नागिन रुक जा।
पिटारे में एक नाग फुफकार रहा है
मेरे मन में इक नाग मचल रहा है ॥ रुक जा ॥
फन में विष देख के संसार घृणा करता है
मन के अमृत पर ध्यान नहीं देता है ॥ रुक जा ॥
यदि तू कदम बढ़ाती है तो तन में स्पंदन होता है
यदि तू नाचने लगती है तो अंग अंग मुसकाता है
॥ रुक जा ॥

(दूर से नाग-स्वर की ध्वनि सुनाई देती है।)

चंद्रभूषण

नागी, नागी मैं हूँ नागी।

नागी

बाबू साहब इधर कैसे चले आये। मैं ही आना चाहती थी।

चंद्रभूषण

मुझे तुम्हारी बीन सुनाई पड़ी । मेरा मन केंचुली से बाहर चला आया । रहा नहीं गया । नागी, तुम में अपूर्व प्रतिमाएँ दिखाई दे रही हैं ।

नागी

मुझ में क्या रखा है बाबू साहब साँप-सँपेले । तुम तो देवता हो । इसीलिए इस कटरीले कीडे में अमृत देख रहे हो ।

चंद्रभूषण

नहीं नागी, तुम्हारे शरीर में नागिन की जैसी लचक है जिसे आज तक किसी महान् शिल्पी ने चित्रित नहीं किया है । तुम्हारे बदन में निर्झर करवटें ले रहा है । तुम्हारी आँखों में उषा की आभा है । यदि मैं तुम्हें इसी तरह देखता रहा तो एक न एक दिन एक महान् प्रतिमा का निर्माण कर सकूंगा ।

नागी

अरी मैय्यारी मैय्या, यह क्या कह रहे हो बाबू साहब, ये बातें सुनकर मुझे गुदगुदी-सी हो रही है । ऐसा न कहो बाबूजी ।

सैनिक

(प्रवेश करता है ।) बाबू साहब, जायप सेनानी पधारे हैं । आपको बुला रहे हैं ।

चंद्रभूषण

बुला रहे हैं ? ठीक है । नागी, कल फिर मिलेंगे ।

(नागी सिर हिलाती है । बीन बजाती रहती है ।)

छठा दृश्य

(मन्दिर के निर्माण का प्रदेश। जायप सेनानी और चन्द्रभूषण)

जायप सेनानी

चन्द्रभूषण ! कोई विशेष बात नहीं। "नृत्त-रत्नावली" की नाटच भंगिमाओं के जो उदाहरण तुमने अंकित किये हैं, उन्हें मैं देखना चाहता हूँ। परसों ही देखना चाहता था, किन्तु देख नहीं पाया।

चंद्रभूषण

आपकी जैसी इच्छा। यह देखिये (बताते हुए) यह है "प्रेंखण लास्य···यह है पेरण···।

जायप सेनानी

बहुत सुन्दर है। यह "कासक" है न ? षोडश नायिकाओं को नृत्य करते हुए तुमने कितने अच्छे ढंग से अंकित किया है !

चन्द्रभूषण

प्रभू, यह "चिन्तुँ नृत्य"।

जायप सेनानी

हाँ, हाँ। आस-पास के मृदंग ही इसका परिचय दे रहे हैं। यह चारण नृत्य हैं न ?

चंद्रभूषण

जी हाँ।

जायप सेनानी

कितना अपूर्व और अद्भुत है यह हस्तभंगी विलास, यह उद्धतपाद विन्यास। ये निरे पत्थर नहीं हैं चन्द्रभूषण ! तुम्हारे हाथों के अमृत स्पर्श से जीवन अमर हो गये हैं।

चंद्रभूषण

मैं प्रभू की प्रशंसा का पात्र बन सका। धन्य हूँ।

जायप सेनानी

यदि तुम इसी लगन से काम करते रहो तो हमारे इस मन्दिर की कला सहस्त्र-स्तंभी मन्दिर से बढ़ जाएगी।

चन्द्रभूषण

प्रभू ! यह मेरे बस की बात नहीं। फिर भी प्रयत्न करूँगा।

सातवाँ दृश्य

(चन्द्रभूषण गुनगुनाता रहता है।)

कौन जाने पत्थरों में
छिप गये हैं नयन किसके ?
कौन जाने पत्थरों में
तप रहे हैं हृदय किसके ? ।। कौन ।।

(चंद्रभूषण काम में लगा हुआ है। इतने में दूर से बीन की ध्वनि सुनाई देती है। चंद्रभूषण काम छोड़ कर चला जाता है। यह देखकर वहाँ काम करनेवाले शिल्पी बातें करने लगते हैं।)

एक शिल्पी

हमारे महाशिल्पी का ढंग ही बदल गया है भाई।
(खिलखिला कर हँसता है।)

दूसरा शिल्पी

यह कैसी मज़ाक है ?

पहला शिल्पी

मजाक नहीं तो क्या है ? सँपेरे की उस लड़की से आंख लड़ा रहे हैं बाबूजी।

दूसरा शिल्पी

हाँ, तेरे लिए तो वह सँपेरिन है। उनके लिए वह शिल्प सुन्दरी है। जबसे महाशिल्पी ने उस लड़की को देखा है तब से उनकी छेनी में न जाने कौन सी शक्ति आ गयी है। तुझे मालूम है कि मनुष्य हाथ उठाकर भी जिसे नहीं छू सकता उस नन्दिकेश्वर की मूर्ति में उन्होंने पन्द्रह दिन में ही प्राण डाल दिये हैं।

पहला शिल्पी

आँखों पर छा जानेवाली कामुकता की, तुम कला कहकर प्रशंसा करते हो। तुम्हारे भोलेपन पर, मुझे हँसी आरही है भाई !

खिलखिला कर हँसता है।

जायप सेनानी

(प्रवेश करके) यह कैसा मसखरापन है !

पहला शिल्पी

(कांपते हुए) जी हुजूर—जी हुजूर···।

जायप सेनानी

चन्द्रभूषण कहाँ है ? इन दिनों उसका दिखना ही मुश्किल हो गया।

पहला शिल्पी

प्र···भू···।

जायप सेनानी

साफ साफ कहो। बीन के पीछे-पीछे घूम रहा है न ?

पहला शिल्पी

जी हूजूर······जी हूजूर······।

जायप सेनानी

मैं समझ गया। ठीक है। तुम लोग अपना काम करो। (कुछ चलकर) कला के घूंघट में वासना फुफकार रही है। हूँ······ यह बात अच्छी नहीं है।

(जायप सेनानी का प्रस्थान)

**

आठवाँ दृश्य

(चन्द्रभूषण और नागी चलरहे हैं।)

नागी

बाबूजी, इस बीच की मूर्तियाँ दिखाओगे नहीं ?

चंद्रभूषण

अरी, तुम्हें देखकर मेरी प्रतिमाएँ लज्जित हो जाएँगी।

नागी

(लज्जा से) बा···बू···जी।

चद्रंभूषण

चलो नागी।

(दोनों प्रतिमाओं की ओर जाते हैं। दूर से जायप सेनानी आते हुए दिखाई देते हैं)

नागी

बाबूजी ! उधर देखो, सेनापति। मैं चली।

चंद्रभूषण

नागी, इस तरह क्यों काँप रही हो ? ठहरो, डरने की कोई बात नहीं है।

नागी

नहीं बाबूजी, मैं ठहर नहीं सकती। जाऊँगी। बाबूजी, जाऊँगी। (भाग जाती है।)

(स्पष्ट रूप से छेनियों की ध्वनि सुनाई पड़ती है। जायप चन्द्रभूषण के पास पहुँचता है।)

जायप सेनानी

महाशिल्पी शायद घूमने निकले हैं।

चंद्रभूषण

संध्या का समय है न !

जायप सेनानी

चन्द्रभूषण ! वह समय बीत गया जब कि मैं तुम्हारे चमत्कार की सराहना करता था। दिन-ब-दिन मैं तुम में एक विचित्र पवरिर्तन देख रहा हूँ।

चंद्रभूषण

परिवर्तन तो प्रकृति का धर्म है श्रीमान् !

जायप सेनानी

यह तो हम भी जानते हैं। पर धर्म-सम्मत परिवर्तन को ही हम मानते हैं। यदि वह उन्माद का रूप धारण करे.........।

चंद्रभूषण

आपका व्यंग्य मेरी समझ में नहीं आ रहा है।

जायप सेनानी

व्यंग्य नहीं, यह यथार्थ है। उस सँपेरिन से तुम्हारा क्या संबंध है ?

चंद्रभूषण

प्रभु शांत होकर सुनें तो कुछ निवेदन करूँ।

जायप सेनानी

तुम्हरी देरी मेरी अशांति का कारण बन रही है, इसका ध्यान रहे।

चंद्रभूषण

तो फिर सुनिए। वह मेरी छेनी की साँस है। मुझमें नई चेतना मुखरित करनेवाला नागस्वर है।

रा.—4

जायप सेनानी

रोचक शब्दों की आड में अपनी वासना को छिपाने का प्रयत्न मत करो। उस सँपेरिन का साथ तुम्हारे व्यक्तित्व के लिए कुठाराघात है। तुम्हारी कला के लिए कलंक है।

चंद्रभूषण

नहीं, प्रभु, नहीं। आप मुझे गलत समझ रहे हैं। जब से उस सँपेरिन को देखा है, न जाने मुझमें कोई महा-शक्ति बांध तोड़ कर उमड रही है। अनेक नये संसार मुझमें गतिशील होरहे हैं। मैं शीघ्र ही एक नया कलाकार बनने जारहा हूँ।

जायप सेनानी

हूँ... करो कविता। चन्द्रभूषण ! एक बार फिर सुनो। नागी के सम्पर्क से तुम्हारा ढंग ही बदल गया है। तुम अपने लक्षय से दूर होते जा रहे हो। साँप का सहवास उचित नहीं है। अपने उदयोन्मुख जीवन को तुम सांझ के अंधियारे की ओर घसीटरहे हो। अपनी वंश मर्यादा, अपने व्यक्तित्व और अपनी कला का तुम एक बार स्मरण करो। इस क्षण से ही सही तुम उस पामर स्त्री का साथ छोड़ दो। यह मेरी अंतिम चेतावनी है।

(घोडे पर सवार होकर तेजी से चला जाता है।)

चंद्रभूषण

प्रभु ! प्रभु ! मेरी बात तो सुनिये.........।

नौवाँ दृश्य

(चन्द्रभूषण छेनी चलाते हुए गीत गाता रहता है।)

तन है इनका बड़ा कठिन
पर मन है मानों सचमुच मक्खन
प्राणवान इस मानव जग से
लोकोत्तर है प्रस्तर गण ॥ कौन ॥

चंद्रभूषण

कितना ही प्रयत्न क्यों न करूँ, मेरा हाथ आगे बढ़ता नहीं है। शृंखला में जकड़ा हुआ हाथ कैसे नई सृष्टि कर सकता है ? नागी के शरीर की भंगिमाओं के लक्षण क्या नृत्त रत्नावली में मिल सकते हैं ? (स्वर में परिवर्तन होता है) आज मैं इस शृंखला को तोड़ने जा रहा हूँ। नागी का चित्रण ही मेरी शिल्पकला का चरम लक्ष्य है। नागी, ओ नागी ! तुम कहाँ हो ? (दूर से बीन की आवाज़ सुनाई देती है।) लो, नागी आ रही है, इसी ओर आ रही है। (बीन का स्वर निकट आता जा रहा है) नागी तुम आ रही हो न ? आओ आज मुझ में जो उत्साह उमड़ रहा है, वह एक अपूर्व रचना का नांदीवाचक बनेगा। आओ नागी, आओ।

नागी

बाबूजी, ऐसी बातें क्यों कर रहे हैं !

चंद्रभूषण

नहीं नागी, तुम मेरी वेदना को नहीं समझ सकती। खड़ी रहो तुम मेरे यहाँ। तुम्हें मैं लाख-लाख नयनों से देखता रहूँगा। एक बार इठलाती हुई, बलखाती हुई यों चलो जिससे दुबली-पतली

तुम्हारी कमर मचल उठे। मैं अपने हृदय-पट पर तुम्हारे बदन की लचकें अंकित कर लूँ। तुम एक बार नख से शिख तक थिरक चलो। चकाचौंध करनेवाली तुम्हारी सुन्दरता को मैं कोटि-कोटि नज़रों से पी जाऊँ। ठहरो…चलो…नाचो…।

नागी

बाबूजी, यह क्या है बाबूजी !

चंद्रभूषण

नागी, चलो, चलो मचलो, नागी…तनिक रुक कर थिरको। नागी थिरको। उत्कट उमंग मुझे खदेड रही है। यदि तुम नहीं हिलोगी, नहीं चलोगी तो यह उमंग मेरे कलेजे को चीर देगी। फाड़ देगी। नाचो…नाचो…।

नागी

आच्छा बाबूजी, अच्छा। मैं हिलूंगी, मचलूंगी। नाचूंगी। तुम्हारे लिए…तुम्हारे लिए। (नागी नाचती है।)

चंद्रभूषण

नाचो नागिन नाचो
फड़क-फड़क कर थिरक-थिरक कर ॥ नाचो ॥
नस-नस को एक बीन बनाकर
अंग-अंग मृदंग बनाकर
मन को एक डमरू बनाकर
तब्लांग तकधिमि तथिगिण कह कर ॥ नाचो ॥
नाच उठे सब प्रमथों के गण
हुंकार उठें अब नंदिकेश्वर
झूम उठें उमा महेश्वर
तक झण तक झण झग झण कह कर ॥ नाचो ॥
तेरे चंचल नयन देख कर
स्तब्ध रह गयीं चपलाएँ
तेरी चलित ललित बाहों से
उभरीं मधु की लहरावलियाँ ॥ नाचो ॥

(नागी नाचती है । नृत्य के अन्त में)

चन्द्रभूषण

(बड़े उद्वेग के साथ) मेरी जीवन संध्या में नवीन अरुणिमा फूटरही है। शिल्पकला के द्वारों को खोलनेवाला रहस्य मेरी मुट्ठी में आ गया है। नागी, बस तुम्हें केवल तुम्हें ही अंकित करूँगा। तुम्हारे शरीर में पनपनेवाली चेतना को मैं पत्थर में ढाल दूंगा। तुम्हारे अमृत-हृदय को मैं इन शिलाखण्डों पर मुद्रित करूँगा।

नागी

यह क्या है बाबूजी ! आज कैसी अजीब बातें कर रहे हो। इन बातों को सुनकर मुझे डर लग रहा है। डर लग रहा है बाबूजी।

चंद्रभूषण

नागी, तुम में नाग-देवता का अंश है। नाग को तुम क्या समझती हो ? वह तो चेतना का प्रतिबिंब है। बैठो, मेरे सामने बैठो। तुम्हारे बराबर की नागकन्या की प्रतिमा ढाल कर शिल्पकला की आरती उतारूँगा। बैठो, मेरे सामने बैठो।

नागी

तुमने तो मेरे मुंह पर ताला ही लगा दिया।

(चंद्रभषण छेनी चलाने लगता है।)

दसवाँ दृश्य

(जायप सेनानी का डेरा। शिल्पियों का प्रवेश)

पहला शिल्पी

दुहाई है, दुहाई।

जायप सेनानी

कौन है ?

पहला शिल्पी

मैं शिल्पी हूँ प्रभू।

जायप सेनानी

भीतर आसकते हो। क्या बात है ?

पहला शिल्पी

क्या बताऊँ श्रीमान्।

जायप सेनानी

समझ गया। चन्द्रभूषण की ही बात है न ?

पहला शिल्पी

हाँ प्रभू ! दिन-रात उस नागिन के सामने बैठकर…

जायप सेनानी

ऐश करता है, यही है न ?

पहला शिल्ली

इतना ही नहीं प्रभू…उसके बराबर की मूर्ति गढ़ रहा है। वही रूप…। उसी नागिन का।

जायप सेनानी

बात यहाँ तक पहुँच गयी !

पहला शिल्पी

हाँ प्रभू । कल या परसों वह मूर्ति बन जाएगी और सिंहद्वार में समा जाएगी ।

जायप सेनानी

समा जाएगी सिंहद्वार पर । देखा जाएगा । तुम जा सकते हो ।

(शिल्पी चला जाता है ।)

हूँ · आज ही इसका फैसला हो जाएगा । हमारी वह सहन शीलता की परीक्षा ले रहा है । पागल कहीं का ?

(घोडे पर सवार हो कर निकलता है ।)

(मंदिर के निर्माण का प्रदेश । चन्द्रभूषण छेनी चलाते हुए गुनगुना रहा है ।)

नागी

(डरती हुई) बाबूजी, मालिक बड़ी तेज़ी से इसी ओर आ रहे हैं । चेहरा तमतमारहा है । इसी ओर आरहे हैं । बाबूजी, मैं छिप जाऊँगी । मुझे डर लग रहा है । (पत्थरों के पीछे छिप जाती है ।)

जायप सेनानी

(प्रवेश करते हुए) यह क्या हो रहा है ? यह कैसी विश्वा-मित्र की सृष्टि है ?

चंद्रभूषण

प्रभू, यह विलक्षण सृष्टि हो सकती है, किन्तु विश्वामित्र की सृष्टि नहीं हो सकती ।

जायप सेनानी

अच्छा तो बता सकते हो कि नृत्त रत्नावली की यह कौन सी भंगिमा है ?

चंद्रभूषण

क्षमा कीजिए। यह ऐसा कलाखंड है जिसका किसी लक्षण ग्रंथ में उल्लेख नहीं है।

जायप सेनानी

वाचालता की भी एक हद होती है। मंगलमय शिवालय में एक नागिन की मूर्ति का स्थापन! क्या यही तुममें बल खानेवाली महाशक्ति है? पवित्र शिल्पकला को एक पामर स्त्री के पाँवों तले बिखेर दिया? मन में फुफकारती वासना को अपने हद तक ही सीमित रखो। इसे मूर्ति में मत ढालो।

चंद्रभूषण

प्रभू! इस प्रकार निंदा मत कीजिए। हो सकता है कि इस नागिन ने सँपेरे के घर में जन्म लिया हो। यह उसका दोष नहीं है। वह एक साधारण स्त्री नहीं है। उसमें नागदेवता का अंश है। उसे लक्ष्य बना कर मैं शिल्पकला का नूतन विन्यास कररहा हूँ। वह विन्यास समस्त नाट्य सूत्रों से परे है। यह शिल्प-खंड भविष्य में कितने ही काव्यों का प्रेरक बनेगा। अनेक काव्यों के मूल्यांकन की यह कसौटी सिद्ध होगा। प्रभू इसका निर्णय काल ही करेगा। शांत होकर मुझे आशीर्वाद दीजिए। दो दिनों में यह पूरी होगी। रामलिंगेश्वर मन्दिर के लिए यह मूर्ति भरतवाक्य होगी।

जायप सेनानी

(कर्कश स्वर में) असंभव, सहस्रों जिह्वाओं से काम-वासना व्यक्त करनेवाली यह नग्न-प्रतिमा पवित्र मन्दिर के निर्माण का भरत-वाक्य बनेगी! असंभव। तुम इसे तराशना छोड़ दो। इस मूर्ति को मैं पल भर के लिए भी यहां देखना नहीं चाहता। कौन है?

भट

(प्रवेश करते हुए) हुजूर।

जायप सेनानी

हटा दो इस मूर्ति को मेरी आँखों के सामने से ।

चंद्रभूषण

नहीं प्रभू, ऐसा मत कीजिए । इस प्रतिमा की रचना मेरे जीवन का ध्येय है । यह प्रतिमा मेरी आँखों से ओझल हो तो मैं जी नहीं सकता ।

जायप सेनानी

बकवास बन्द करो। देखते क्या हो, निकाल दो इस मूर्ति को। (मूर्ति को हिलाते हैं ।)

चंद्रभूषण

(आवेश में) प्रभू···प्रभू, क्षमा कीजिए प्रभू । अंतिम सजावट करने दीजिए । नहीं मानेंगे ? नहीं मानेंगे ? तो सुनिए उस मूर्ति को हटाने से पहले मुझे हटा दीजिए । (उपेक्षा से) हूँ, मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ कि किसी के निकाल बाहर करने तक यहाँ खड़ा रहूँ । आज्ञा······ (चला जाता है ।)

जायप सेनानी

रुक जाओ । प्रभु के आदेश का तिरस्कार बच्चों का खेल नहीं है । देखते क्या हो ? इसे गिरफ्तार करो ।

चंद्रभूषण

(कंपित स्वर में) जिस क्षण यहाँ से नागी की प्रतिमा उठाई गई, उसी क्षण मेरी सारी आशाएँ समाप्त हो गईं। नागी के बिना यह विशाल संसार और तंग कारागार दोनों मेरे लिए बराबर हैं। चलिये······ (चलता है ।)

नागी

(नेपथ्य से अचानक कूदकर आती है ।) मालिक, मालिक······।

बाबूजी को छोड़ दो। ये तो देवता हैं। इनका कोई अपराध नहीं। मुझसे मिलने के बाद ही वे इतने बदल गये। मुझे बंदी बनाओ, मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके कौओं और चीलों के सामने फेंक दो...। बाबूजी का कोई कसूर नहीं है। इन्हें छोड़ दो मालिक। मैं तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ.... ...।

जायप सेनानी

हटा दो इसे मेरे सामने से। और ले चलो चंद्रभूषण को एकशिलानगर।

(नागी जोर-जोर से "बाबूजी....बाबूजी..." पुकार कर रोती है। चंद्रभूषण "नागी....नागी...." पुकारता हुआ दूर चला जाता है।)

ग्यारहवाँ दृश्य

(मन्दिर के निर्माण का प्रदेश । दो शिल्पी बातें करने लगते हैं ।)

एक शिल्पी

जब से चंद्रभूषण बंदी बनाये गये, तब से मुझे अपशकुन ही दिखाई देते हैं ।

दूसरा शिल्ली

ओहो, मालूम होता है उनका अंश तुम में भी प्रवेश कर गया है ।

पहला शिल्पी

नहीं भाई, इन तीन दिनों में मुझे दुःस्वप्न दिखाई दे रहे हैं । रात में मुझे स्वप्न आया जैसे एक बड़ा साँप उलटा चल रहा है । उसके बाद तो मुझे साँप ही साँप दिखाई दिये । जिस चीज़ को मैंने छुआ वही साँप बन गया भाई।

दूसरा शिल्पी

यह सब तुम्हारा भ्रम है भैया । यदि सभी स्वप्न सच्चे होते तो खरगोश के भी सींग निकल आते । घबराओ मत । मेरी तरह हिम्मत से काम लो । (ओ-ह कर चीत्कार उठता है ।)
साँप···भैया सांप···? यह देखो साँप ।

पहला शिल्पी

अरे बाप रे । यह मेरे हाथ का हथौड़ा भी साँप बन गया है । बापरे बाप । मैं तो मर गया । मैं साँपों पर बैठा हुआ हूँ । बापरे बाप ! इधर साँप···उधर साँप ।

(पीछे से साँप-साँप की आवाज़ होती है ।)

बारहवाँ दृश्य

(गणपतिदेव का दरबार)

महाराज, हमें बचाइए । अपने मंदिर की रक्षा कीजिए ।

गणपतिदेव

जायप, ये दुःखी लोग कौन हैं ?

जायप सेनानी

प्रभु, हमारे रामलिंगेश्वर मन्दिर के शिल्पी जान पड़ते हैं । तुम इस तरह क्यों कांप रहे हो । कहो, क्या बात है ?

दूसरा शिल्पी

प्रभू, कहने के लिए अब क्या रह गया है ? तीन दिन से हथौड़ा छूना कठिन हो गया है । जिस पत्थर को छुएँ वह साँप ही साँप है । जहाँ पाँव हैं वहीं साँप हैं । साँपों के फुफकार से मंदिर की प्रत्येक दीवार लड़खड़ा रही है ।

पहला शिल्पी

यहाँ तक कि हमारे हथौड़े भी साँप बन रहे हैं ।

दूसरा शिल्पी

हम वहाँ एक पल भी जी नहीं पा रहे हैं ।

(सभा में कोलाहल मचता है ।)

गणपतिदेव

यह सब क्या सुन रहे हैं ? जायप, यह कैसी विपरीत स्थिति है ?

जायप सेनानी

यह विपरीत स्थिति नहीं है। प्रभू···एक नागिन की वक्र गति है।

रुद्र सेनानी

क्या कहा आपने ? चंद्रभूषण की कैद से इसका कोई संबंध तो नहीं है ?

जायप सेनानी

महा सेनापती का विचार बिलकुल सही है। महाराज की आज्ञा हो तो सभा के सामने सारा रहस्य खोल दूं।

गणपतिदेव

हम सुनने के लिये प्रस्तुत हैं।

जायप सेनानी

शिल्पी चन्द्रभूषण एक नागिन के मोह-जाल में फँस कर अपना कर्तव्य भूल बैठा है। इतना ही नहीं, उसने उसकी एक नग्न प्रतिमा भी बनायी है और उसे मन्दिर के सिंह-द्वार पर स्थापित करने का आग्रह करने लगा है। मैंने उसे रोक दिया है। लेकिन उसका व्यवहार राजाज्ञा के उल्लंघन तक पहुँच गया है। इस पर उसे कैद कर यहाँ ले आया हूँ।

गणपतिदेव

ऐसा ! उसको कैद करने और ऐसी विपरीत स्थिति के पैदा होने का ······

जायप सेनानी

घनिष्ट संबंध है प्रभू। हम से बदला लेने के लिये नागिनने यह चाल चली है। दवा-दारू और माया-मन्तर का अभ्यास संपेरों को

बचपन से ही होता है न ? फिर क्या ? नागिन ने अपना माया-जाल फैलाया है। मन्दिर में पतंगों की तरह सांपों के झुंड उमड आये हैं। उन्होंने सोचा होगा कि हम इससे घबरा कर चंद्रभूषण को रिहा कर देंगे। यदि महाराज इस विषय में मुझे अधिकार दें तो दो दिन में इस समस्या को हल करदूंगा।

गणपतिदेव

देश के हित के लिए तुम जो कुछ करना चाहो कर सकते हो।

जायप सेनानी

धन्य हूँ महाराज। इसी क्षण मालमपेट जाता हूँ और उस नागिन को कैद कर ले आता हूँ। शिल्पीजन ! कल से तुम लोग अपने काम पर लग जाओ।

शिल्पी

जो आज्ञा महाराज।

तेरहवाँ दृश्य

(बन्दी-गृह में चंद्रभूषण)

रक्षक

बाबूजी, आधी रात हो गई है। कब तक जागतें रहेंगें। सोइए न !

चंद्रभूषण

नींद मेरी बड़ी दुश्मन है भाई। आँखें तो बन्द कर सकता हूँ। पर मन को······? देखो, वह देखो, मेरी नागिन आ रही है। जैसे चलती हुई चमेली की बेल हो। तुझे दिखाई नहीं देती ?

रक्षक

अजी बाबू। न तो वह नागिन है, न चमेली की बेल है। यह सब आपका भ्रम है। (जम्हाई लेता है) मुझे नींद आ रही है, नींद। कंबख्त नींद। यह बाबूजी के पल्ले पड़ती तो कितना अच्छा होता। (जम्हाई लेते हुए चुटकी बजाता है।)

चंद्रभूषण

(पहले कुछ गुनगुनाते हुए फिर गीत गाता है।)

गीत

ओ सजनी तेरा तन इठलाती सुन्दर नागिन
ओ प्रीतम तेरा मन अमर प्रेम का उपवन ॥
हम दोनों का यह बन्धन जन्म-जन्म का अनुपम बंधन
युग-युग तक महके ऐसा यह शीतल चन्दन ॥ओ॥
अंकित है तू छेनीं में जीवित है तू सांसों में
मुद्रित हं प्रतिमाओं में उज्वल है इन हासों में ॥ओ॥
नहीं-नहीं तू इक नागिन मेरे प्राणों की है रागिन
अणु-अणु में तू समागई है बनकर अनुभव की मुस्कान ॥ओ॥

(आधी रात को सूचित करते हुए घंटियाँ बजती हैं ।)

नागी

(धीरे से) बाबूजी…… बाबूजी …..

चंद्रभूषण

(धीरे से) …… कौन ?… …

नागी

मैं बाबूजी …… मैं नागी ……

चंद्रभूषण

नागी, यह कैसा साहस है । यदि किसी ने देख लिया तो ? चली जा, यहाँ से चली जा ।

नागी

नहीं बाबूजी, अकेली नहीं जाऊँगी, तुमको साथ लेकर ही जाऊँगी ।

चंद्रभूषण

क्या कहती हो । कायर की तरह भाग जाएँ ?

गीत

नहीं बाबूजी, यदि तुम कैद में ही रहोगे तो मैं नहीं जी सकती । तुम मेरे साथ नहीं चलोगे तो मैं चट्टान से सर फोड लूंगी । जहर पीकर……

चंद्रभूषण

नागी, अैसा मत कहो । मैं इसे सहन नहीं कर सकता । चलो, जैसी तुम्हारी इच्छा .. … ।

चौदहवाँ दृश्य

(जायप सेनानी का आवास-गृह ।)

रक्षक

प्रभू, प्रभू ।

जायप सेनानी

इतनी रात गये क्या बात है ?

दूसरा रक्षक

प्रभू, हम सजा भोगने के काबिल है ।

जायप सेनानी

कहो न ? क्या हुआ ?

रक्षक

चन्द्रभूषण कारागृह से अभी-अभी भाग गया है ।

जायप सेनानी

शर्म नहीं आती ? तुम कह क्या रहे हो ? कैसे भाग गया ?

रक्षक

आधी रात के समय एक नागिन कारागृह के सामने दिखाई पड़ी । मैंने उसे दुत्कार दिया । वह वहाँ से चुपचाप चली गई । थोड़ी देर बाद हमने आंखें मल कर देखा, कैदी दिखाई नहीं पड़ा ।

जायप सेनानी

धिक्कार है तुम लोगों को । वह अवश्य वही नागिन होगी । तुम पर जादू चला कर चन्द्रभूषण को छुड़ा कर भाग गई है ।

रक्षक

प्रभू, अैसा ही हुआ होगा। (रोने लगता है।)

जायप सेनानी

खामोश ... कौन है वहाँ ?

भट

(प्रवेश करते हुए) आज्ञा महाराज।

जायप सेनानी

बीर घुड़सवार ! तुरन्त निकल पड़ो। चंद्रभूषण और नागिन जहाँ कहीं भी हों, हाथ-पैर बाँध कर यहाँ ले आओ। कल दुपहर तक तुम से यह काम न होगा तो तुम्हारे सर धड़ से अलग हो जाएँगे....। खबरदार।

पन्द्रह दृश्य

सेवक

महाराज । अपराधी आपके सामने प्रस्तुत हैं ।

जायप सेनानी

चन्द्रभूषण ! तुम्हें देख कर मेरा क्रोध उतर गया है। न जाने तुम पर क्यों दया आ रही है । तुम नागिन का साथ छोड़ दो । अपने लक्ष्य पर फिर से ध्यान दो । इसी क्षण तुम्हें मुक्त कर दूंगा ।

चंद्रभूषण

(सूखी हँसी हँसते हुए) आपकी इस अव्याज दया का आभारी हूँ । किन्तु सुन लीजिए । नागी मेरी कला के शरीर की आत्मा है । बिना आत्मा के शरीर केवल हड्डियों का एक ढांचा है ।

जायप सेनानी

तुम्हारा उन्माद बढता ही जा रहा है । फिर भी यह दोष तुम्हारा नहीं है। दोष उस चुडैल का है जिसने जादू चला कर तुम्हें अपने वश में कर लिया है । इतना ही नहीं, कैदी को छुड़ा कर भगा ले जाने का अपराध भी इसके सर है। इसे क्षमा नहीं कर सकता । तुम दोनों सुनो। कान खोल कर सुनो, चन्द्रभषण ! तुम्हें आजीवन कारावास का दण्ड .... नागी तुझे मृत्यु दण्ड ।

नागी

हुज़ूर ..... हुजूर .... (फूट-फूट कर रोती है।)

जायप सेनानी

सुनो जल्लाद, आज रात की तीसरी पहर के बाद नागिन इस संसार में नहीं रहेगी। समझे !

जल्लाद

आज्ञा महाराज।

नागी

दया कीजिये .... दया कीजिये महाराज। कम से कम मेरे बाबूजी को तो रिहा कीजिए।

(जल्लाद नागिन को घसीटता है।)

चंद्रभूषण

(कम्पित स्वर में) नागी .... नागी .... मुझे छोड़कर तुम जा रही हो ? तुम्हारे बिना कैसे जीऊँ। अगर जीवित भी रहूँ तो केवल शिला बन कर .....

(दोनों गले लगते हैं।)

जायप सेनानी

(गरज कर) देखते क्या हो ? दोनों को अलग कर दो। ले जाओ यहाँ से।

नागी

बाबूजी .... बाबूजी .... (पुकारती है।)

सोलहवाँ दृश्य

(जायप सेनानी का शयन-गृह। रात के पहले पहर की घण्टी बजती है। कहीं से नागस्वर की ध्वनि सुनाई देती है)

जायप सेनानी

क़ौन है वहाँ ?

सेवक

आज्ञा महाराज।

जायप सेनानी

यह कैसी आवाज़ है ?

सेवक

कोई राही बीन बजाता जा रहा है।

जायप सेनानी

बीन, इतनी रात गए बीन ! रोक दो उसे।

(बीन बन्द होती है और कुछ देर संगीत। उसके पश्चात पुनः बीन की ध्वनि सुनाई देती है।)

फिर यह कैसा शोर है ?

सेवक

काहे का शोर प्रभू।

जायप सेनानी

तुम्हें सुनाई नहीं दे रहा है ? मेरे कान तो फटे जा रहे हैं। सुन ! वही बीन······।

सेवक

मुझे तो कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा है महाराज।

बेवकूफ कहीं का, चारों तरफ देखो।

सेवक

(चारों ओर देखकर) कहीं कुछ नहीं है महाराज।

जायप सेनानी

कहीं कुछ नहीं ? (बीन जोर से सुनाई देती है।) तो बीन की आवाज मेरे हृदय से ही निकल रही है क्या ?

(बीन के साथ कुछ अन्य ध्वनियाँ)

जायप सेनानी

यह बीन मेरी नसों को निचोड़ रही है। मेरे प्राणों को मरोड रही है। आज यह कैसा संक्षोभ है : क्या यह सब उस नागी का जादू है ? हो सकता है। नागी मेरे हरेभरे जीवन में धूमकेतु बन कर आई है क्या।

(फिर विचित्र संगीत सुनाई देता है।)

ऐसे विकृत विचार आज मुझ में क्यों उठ रहे हैं ? क्या सचमुच नागी इतनी खतरनाक है ? नहीं···नहीं. उसकी शक्ति ही कितनी है ? आखिर उसका अपराध क्या है ? उसके तन में लहर जैसी मोड है, क्या यही उसका दोष है ? नहीं अगर यह दोष है, तो वह विधाता का है। उस के तन की सुन्दरता एक शिल्पी की सांस बन गई है। एक शिल्पी की कला का लक्ष्य बन गया है। इस में उसका क्या दोष है ? सिर्फ उसी बात के लिए मैं ने उसे मृत्यु दण्ड दिया। मुझसे भूल तो नहीं हुई ?....ओह, मेरा सर चकरा रहा है।

(कल्लोल-सूचक संगीत बजता है।)

मुझ में यह कल्लोल-सूचक संगीत कैसा ? मुझ में यह प्रयल कैसा.....यह क्या हो रहा है ?....यह क्या हो रहा है ?

(स्वप्न-सूचक संगीत)

यह लो सर्प, नाग-सर्प। मेरी ओर ही बढता आ रहा है। कहां है मेरी तलवार। (चीख पड़ता है) तलवार की जगह साँप। यह क्या ? उधर पाँच सिरवाला साँप। वह देखो....मुझे देखकर फुफकार रहा है। इधर तक्षक, उधर वासुकि। ओह.....सर्प...भयानक सर्प.... बचाओ....बचाओ।

(अट्टहास)

यह अट्टहास कैसा ? दिशाओं को चीर कर निकलनेवाला यह अट्टहास किसका है ?

(भय-सूचक संगीत और फिर अट्टहास)

अँ...कौन है ? नन्दिकेश्वर ? यह क्या....तुम्हारी आँखे तमतमा रही हैं। हे शंकर, त्राहि, हे बसवेश्वर, चांदनी बरसानेवाले नेत्रों में अंगार कैसे ? मुझसे सहा नहीं जाता। क्या, भक्त की परीक्षा ले रहे हो भगवान्।

(बसवेश्वर का हुंकार सुनाई पडता है)

सर हिलाकर अभय प्रदान करनेवाले आप हुँकार से भयभीत करावें तो हम कैसे जी सकेंगे। प्रभू शान्त होइए, शान्त होइए।

(नन्दिकेश्वर की आवाज होती है-"सेनानी, शान्ति कैसी।)"

जायप सेनानी

क्या यह बसवेश्वर बोल रहे हैं....? बड़ी कृपा है। आज्ञा दीजिए। काकतीयों के राज्य में मुझ जैसे किंकर के रहते आप अशान्त क्यों हैं देव ?

नन्दी

(जोर से हंसता है) जान-बूझकर तूने कीचड में पाँव रखा है। लक्ष्य और लक्षण के विवाद में तू परम सत्य को भूल बैठा है।

जायप सेनानी

मैं—प्रभू—मैं...?

नन्दी

हाँ तुम भूल गये। तुमने नागिन की प्रतिमा का तिरस्कार किया ?

जायप सेनानी

हाँ देव, वह तो एक तुच्छ नारी की प्रतिमा थी, इसलिए।

नन्दी

यही तुम्हारी भूल है। वह तुच्छ नारी की प्रतिमा नहीं। नागदेवता का प्रतिरूप है। नागी साधारण नारी नहीं है। वह कीचड़ में उपजने-वाला कमल है। हलाहल में चमकनेवाली अमृत की रेखा है। उसमें नागदेवता का अंश है नागी का मृत्यु-दण्ड नागदेवता की प्रतिमा का अपमान है। इतना ही नही यह उस परमेश्वर की अवज्ञा है जो नागों से स्वयं अलंकृत रहते हैं। मन्दिर के चारों ओर जो आतंक फैला है, और तुम्हारे मन में जो संक्षोभ हो रहा है जानते हो यह सब किसका फल है ? परमेश्वर की अवज्ञा का प्रतिफल है। नागी और चन्द्रभूषण निमित्त-मात्र हैं। इन सभी उत्पातों के कर्ता केवल परमेश्वर हैं। नागभूषण हैं। नागभूषण, नागभूषण · नागभूषण···।

(ऊँचे स्वर का संगीत। स्वप्न टूट जाता है।)

जायप सेनानी

(जोर से) बसवेश्वर—। बसवेश्वर। कहाँ हो तुम ? यह कैसी माया है ? यह। (चीख उठता है)

सेवक

(भागते हुए आता है) प्रभू···प्रभू···

जायप सेनानी

कौन हो तुम ? क्या यह सब एक स्वप्न था ! नन्दिकेश्वर के दर्शन एक स्वप्न मात्र थे ? मैं कहाँ हूँ···अरे मैं कहाँ हूँ ?

सेवक

प्रभू आप अपने शयन-गृह में हैं।

जायप सेनानी

स्वप्न··· स्वप्न, नन्दिकेश्वर, नागाभरण, देवता। नागिन। नागी, कितना बड़ा अपराध हो गया है? भोलीभाली नागी को मृत्यु दण्ड? कला-ब्रह्म को कारावास का दण्ड? ऐसा नहीं हो सकता। नागी नहीं मर सकती। उसे जीना होगा···जीना होगा।

(रात में तीसरी पहर की घण्टी बजती है। जायप घोडे पर चढ़ कर वध्य-स्थल की ओर दौड़ता है)

(दूर से) ठहरो···ठहरो···

(नजदीक आ जाता है।)

जल्लाद

महाराज। आपही का हुकुम था।

जायप सेनानी

मैं उसे वापस लेता हूँ। नागी के बन्धन खोल दो। नागी! मैंने तुम्हें गलत समझा है। तुम में जो नागदेवता का अंश है, उसे मैं नहीं पहचान सका। आओ···नागी,। तुम और चन्द्रभूषण आज से पिंजडे से मुक्त पंछी हो।

नागी

हुजूर···हुजूर। क्या आपका विचार बदल गया है! यह मेरे पुण्य का फल है। आज मैंने नया जन्म लिया है। बाबू कहाँ हैं? मेरे बाबू कहाँ हैं?

जायप सेनानी

चलो नागी हम वहीं चलें।

सत्रहवाँ दृश्य

(चन्द्रभूषण कैद से मुक्त होकर नागिन की प्रतिमा की अन्तिम सजावट करता रहता है।)

चंद्रभूषण

(गहरी साँस लेकर) ओ नागी, उठकर खड़ी हो जाओ। मेरा स्वप्न साकार हुआ। आज से मैं नवीन शिल्पी हूँ। नागी, देख। इस नागिन की प्रतिमा में क्या तेरा प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं दे रहा है ?

नागी

बाबूजी, यह प्रतिमा नहीं है। इसके आगे तो मैं ही प्रतिमा बन गई हूँ।

चंद्रभूषण

नागी, क्या यह सच है ? यदि यह सच है तो मानों मेरी शिल्प-कला कैलास शिखार पर पहुँच गई है। आज हीं इस सजीव प्रतिमा को सिंहद्वार पर स्थापित करूँगा। जाऊँ···हाँ नागी, क्या तुम्हें याद है ?

नागी

किस बात की ?

चंद्रभूषण

आगामी पूर्णिमा को शिव-लिंग की स्थापना के उपलक्ष्य में महोत्सव होगा। कल मेरी रिहाई के समय जायप सेनानी ने स्वयं मुझ से कहा था न ? उस महोत्सव के अवसर पर महाराजा गणपतिदेव स्वयं पधारेंगे। अरी नागी। महाराजा तुम को मन से आशीर्वाद देंगे

नागी

ऐ साजन ! तुम्हें तो आँखो में बसा लेंगे न।

(दोनों खिलखिला कर हँस पड़ते हैं।)

अठारहवाँ दृश्य

(उत्सव का वातावरण है। शंख, घंटियाँ, ढोल आदि की ध्वनियों के साथ "शंभो शंकर", "जय रामलिंगेश्वर" आदि नारे सुनाई देते हैं।)

जायप सेनानी

महाराज, ये हैं महाशिल्पी–चन्द्रभूषण और यह है नागी।

गणपतिदेव

चंद्रभूषण ! यह केवल मूर्तियाँ ही नहीं हैं, ऐसे सजीव और सरल जीवन के चित्र हैं जिनकी व्याख्या नहीं की जा सकती। तुम्हारी छेनी में प्राण फूँकनेवाली इस नागी का—नहीं नहीं नागम्मा का जीवन धन्य है। नागम्मा ! तुम्हारे सम्बन्ध में हमारे जायप सेनानी ने सब कुछ बताया है। भगवान रामलिंगेश्वर के सम्मुख अपना नाग-नृत्य प्रदर्शित करो।

नागी

(भक्ति भाव से) मिट्टी के ढेले को महाराज ने सराहा है। इस बाबूजी ने मुझ जैसी जंगली चमेली को भगवान की जटा में सजाया है। यह मेरा जीवन रामलिंगेश्वर को अर्पित है। नाच....राग....सब रामप्पा को, रामप्पा को अंकित करूँगी।

गीत

जय जय रामलिंगेश्वर
जय जय उमामहेश्वर ॥
बालचन्द्र से फाल सजाकर
कालकूट की घूंट लगा कर
धूप-छाँह की कथा सुनाते

क्षण में ही कैवल्य बताते ।। जय जय ।।
सांप ही तेरे हैं केयूर
सांप ही तेरे हैं मणिहार
सांपों से क्यों इतनी प्रीत
क्या वे हैं चेतन के संकेत ? ।। जय जय ।।
लिंग रूप धारण कर उज्वल
जग को करते जगमग जगमग
काकतीय शासन का हो नित मंगल
फैले दिगदिगंत तक यश उज्वल ।। जय जय ।।

(गीत धीमा पडता है और संवाद सुनाई देता है ।)

गणपतिदेव

रुद्र सेनानी, कितना सुन्दर है यह नृत्य ।

रुद्र सेनानी

सत्य है प्रभू । जायप सेनानी ! तुम्हें अपनी नृत्त रत्नावली में इन नृत्य भंगिमाओं का उल्लेख अवश्य करना पडेगा ।

जायप सेनानी

रुद्र सेनानी ने मेरे मन की ही बात कही है । नागी की नृत्य भंगिमाएँ मेरे ग्रन्थ का नया अध्याय बनेंगी ।...ॐ शिवम् ..

बृंदगान

फूल विकसे पत्थरों में उस राममंदिर की है लीला
आराम मंदिर कीहै हेला
दिल हैं तडपे पत्थ ों में उस रास क्रीडा की है शाला
वह राम मंदिर की है लीला ।।

समाप्त

PRINTED AT: DAKSHINA BHARAT PRESS. HYDERABAD-4.